[ISSN : 2348-2605]

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

www.gejournal.net

E-mail: hindires@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान
शोध पत्रिका
(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

कर्मभूमि उपन्यास में पारिवारिक संबंधों का चित्रण

डा. देवराज शर्मा
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
मारकण्डा नैशनल कालेज,
शाहाबाद मारकण्डा,

व्यक्ति समाज की सबसे छोटी इकाई है। व्यष्टि से ही समष्टि का निर्माण होता है। सृष्टि के निर्माण में व्यक्ति से बड़ी इकाई परिवार है। अनेक परिवारों से ही समाज का निर्माण होता है। परिवार अनेक व्यक्तियों का समूह होता है जिसमें माता–पिता, पति–पत्नी, पिता–पुत्र, माँ–बेटी, भाई–बहन आदि सम्बन्धी आते हैं।

परिवार में रहते हुए सभी व्यक्तियों की अपनी–अपनी विचारधारा होती है। कई बार अहं के कारण ये विचारधाराएँ टकरा भी जाती हैं। पारिवारिक सम्बन्धों में जहां कड़वाहट आ जाती है वही दुःख की घड़ी में अपने खून की पुकार सुनकर सम्बन्धी अपनों के लिए जान तक देने को तैयार रहते हैं। अपनों के दुःख में दुःखी और खुशी में खुश होते हैं। इन्हीं पारिवारिक सम्बन्धों के सुख–दुःख और उधेड़बुन में व्यक्ति का जीवन निकल जाता है। व्यक्ति के लिए परिवार उस वृक्ष के समान है जिसकी छाया में बैठकर वो अपनों से दुःख–सुख सांझा करता है।

परिवार के बिना तो व्यक्ति उस पक्षी के समान है जिसका अपना कोई घोंसला नही होता जिसमें शाम के समय आकर वो आश्रय लेता है। वैसे भी पारिवारिक रिष्तों के बिना व्यक्ति का जीवन नीरस एवं एकांकी सा हो जाता है। अतः जीवनयापन के लिए परिवार का होना अत्यावष्यक है। लेखक इन्हीं पारिवारिक रिष्तों का अपने साहित्य में वर्णन करता है। क्योंकि एकांकी चरित्र को लेकर कोई साहित्य न तो लिखा जा सकता है और न ही उसकी कहानी आगे बढ़ पाती है। परिवार के अन्य चरित्रों के माध्यम से ही कोई कहानी आगे बढ़ती है और सुख–दुःख में किसी भी नायक को यही चरित्र सहारा देते हैं।

मुंशी प्रेमचंद जी ऐसे ही साहित्यकार हुए है जिन्होनें पारिवारिक रिष्तों को नजदीक से देखा ही नही वरन् समझा भी है। इसे लेकर ही उन्होनें एक उपन्यास लिखा 'कर्मभूमि' जिसमें पारिवारिक रिष्तों को बड़ें ही संवेदनात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। जिनका वर्णन शोधपत्र के रूप में प्रस्तुत है।

परिवारिक सम्बन्ध–

मनुष्य इस संसार में अपने जीवन के अनेक वर्ष पूरे करता है। वह एक सामाजिक प्राणी है। इस जीवन में उसके अनेक पारिवारिक एवं सामाजिक सम्बन्ध होते हैं। उन सम्बन्धों में कभी कड़वाहट आती है और कभी प्यार इन सभी सम्बन्धों का प्रेमचंद जी ने समाज को एक संदेश देने के लिए अपने उपन्यास में वर्णन किया है।

भाई–बहन का सम्बन्ध

अमरकान्त की सौतेली बहन है। जिसका नाम है 'नैना' भाई बहन के बीच बहुत प्यार है। जब अमरकान्त फीस जमा नही करवा पाता है और उसका दोस्त सलीम उसकी फीस भरता है तो नैना उसको कहती है– ''क्या हुआ भैया फीस जमा हुई या नही? मेरे पास बीस रूपये हैं, यह ले लो। मैं कल और किसी से माँग लाऊँगी।''[1]

नैना आगे कहती है– ''मैं तो तुम्हें अपने कड़े दे रही थी, क्यों नही लिये?''[2] और अन्त में नैना अपने भाई, भाभी और पिता के जेल जाने पर भीड़ का स्वयं नेतृत्व करती है। और उसका पति उसको गोली मारकर उसका खून कर देता है। वह गरीब जनता के हकों के कारण शहीद हो जाती है। जेल में बंद अमर को ये सुनकर बड़ा धक्का लगता है।

पिता–पुत्र सम्बन्ध–

उपन्यास के आरम्भ में पिता–पुत्र के सम्बन्ध तनावपूर्ण हैं। उनमें वैचारिक मतभेद हैं। इसी को लेकर अमरकान्त अपने पिता समरकान्त से कहता है– ''मैं तो आपसे बार–बार कह चुका, आप मेरे लिए कुछ न करें। मुझे धन की जरूरत नही। आपकी वृद्धावस्था है। शांतचित्त होकर भगवत् भजन कीजिए।''[3]

इस पर समरकान्त जवाब देता है– ''धन न रहेगा लाला तो भीख मांगोगे। यों चैन से बैठकर चरखा न चलाओगे। यह तो न होगा, मेरी कुछ मदद करो पुरूषार्थहीन मनुष्यों की तरह कहने लगे, मुझे धन की जरूरत नहीं। कौन है जिसे धन की जरूरत नही? साधु सन्यासी तक तो पैसों पर प्राण देते हैं। धन बड़े पुरूषार्थ से मिलता है। जिसमें पुरूषार्थ नही वह क्या धन कमाएगा? बड़े–बड़े धन की उपेक्षा कर नही सकते, तुम फिर किस खेत की मूली हो।''[4]

उनके आपसी मतभेद केवल विचार भिन्नता के कारण है लेकिन जब उसे अपने पिता की दयालु प्रवृत्ति का पता चलता है तो वह गर्व से भर जाता है और उसके मन में पिता के प्रति सम्मान पैदा हो जाता है।

''अमरकान्त ने अपने पिता को स्वार्थी, लोभी, भावहीन समझ रखा था। आज उसे मालूम हुआ उनमें दया और वात्सल्य भी है। गर्व से उसका हृदय पुलकित हो उठा।''[5]

प्रेमचंद ने दर्शाया है कि पिता चाहे क्रोध में कुछ भी कहे पर वह अपनी सन्तान को दुःखी नही देख सकता। जब अमरकान्त चला जाता है तो समरकान्त दुःखी होकर कहता है– ''गिरफ्तार तक हुए, पर मुझे पत्र न लिखा उसके हिसाब से तो मैं मर गया। जरा यह मुटमरदी देखो कि घर में किसी को खबर तक न दी। मैं दुष्मन था, नैना तो दुष्मन न थी, शान्तिकुमार तो दुष्मन न थे। यहां से कोई जाकर मुकद्दमें की पैरवी करता तो ए.बी. का कोई दर्जा तो मिल जाता।''[6]

जेल में जब समरकान्त अमर को लेने पहुंचे तो– ''अमर दौड़कर पिता के चरणों पर गिर पड़ा। पिता के प्रति आज उसके हृदय में असीम श्रद्धा थी नैना मानों आँखों में आंसू भरे कह रही थी, भैया दादा को कभी दुःखी न करना, उनकी रीति–नीति तुम्हें बुरी भी लगे तो भी मुँह मत खोलना। वह उनके चरणों को आंसुओं से धो रहा था और सेठ जी उसके ऊपर मोतियों की वर्षा कर रहे थे।''[7]

उपरोक्त प्रसंगों में दर्शाया गया है कि चाहे पिता–पुत्र में वैचारिक भिन्नता हो लेकिन दोनों दिल से एक दूसरे से प्रेम करते हैं। जहां पुत्र को पिता के दानी स्वभाव का पता चलता है तो वह गर्व से भर जाता है। वहीं पिता भी पुत्र के जेल में जाने पर दुःखी होता है। प्रेमचंद के उपन्यास में जैसा दर्शाया है वैसा आजकल हमारे आस–पास घर–घर की कहानी है।

पति–पत्नी सम्बन्ध–

प्रेमचंद ने कर्मभूमि उपन्यास में पति–पत्नी के सम्बन्धों को दर्शाया है, उन्होनें अमर और सुखदा के सम्बन्धों को तो 'शुरू के वाक्यों से ही उजागर कर दिया है। उन्होनें कहा है– ''विवाह हुए दो साल हो चुके थे पर दोनों में कोई सामंजस्य न था। दोनों अपने–अपने मार्ग पर चले जाते थे। दोनों के विचार अलग, व्यवहार अलग, संसार अलग। जैसे दो भिन्न जलवायु के जन्तु एक पिंजरे में बंद कर दिये गये हो।''[8]

प्रेमचंद जी अन्यत्र कहते है– ''जीवन के गूढ़ व्यापारों में पृथक थे। दूध और पानी का मेल नही, रेत और पानी का मेल था जो एक क्षण के लिए मिलकर पृथक हो जाता था।''[9]

अमर का अपनी पत्नी के सम्बन्ध के बारे में आगे भी आता है– ''नैना भी उससे निकटतर थी। सुखदा और नैना दोनों उसके अन्तःस्तल के दो फूल थे। सुखदा ऊँची दुर्गम और विशाल थी। नैना समतल, सुलभ और समीप।''[10]

वहीं सुखदा पति के प्रति पूर्ण समर्पित भी दिखाई देती है–''मेरा दुःख–सुख तुम्हारे साथ है। जिस तरह रखोगे उसी तरह रहूँगीं। थोड़ा मिलेगा, थोड़े में गुजर कर लेंगें।''[11]

लेखक पति–पत्नी के सम्बन्धों को लेकर अन्यत्र कहता है– ''अमरकान्त भी इस जीवन से ऊब उठा था। सुखदा के साथ जीवन कभी सुखी नही हो सकता, दोनों की जीवन–धारा अलग, आदर्श अलग, मनोभाव अलग। केवल विवाह–प्रथा की मर्यादा निभाने के लिए वह अपना जीवन धूल में नही मिला सकता, अपनी आत्मा के विकास को नही रोक सकता।''[12]

परन्तु अन्तः में अमरकान्त का हृदय परिवर्तित हो जाता है वह अनुभव करता है कि वह जो आरोप सुखदा पर लगाता था वह गलत थे। उसमें स्वयं में कमी थी। अपनी गलती को स्वीकार करते हुए वह अपनी पत्नी सुखदा को अपना लेता है। इस प्रकार के सम्बन्ध विच्छेद और पति–पत्नी द्वारा एक दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप आज के समाज में घर–घर में दिखाई देते हैं।

लेखक ने कर्मभूमि में ननद–भाभी, माँ–बेटी, ससुर–बहू आदि रिष्तों का भी बड़ी सुन्दरता से वर्णन किया है।

निष्कर्षः–

व्यक्ति परिवार का और परिवार समाज का अभिन्न अंग है। परिवार के बिना समाज की कल्पना भी नही की जा सकती। प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यास 'कर्मभूमि' में पारिवारिक रिष्तों को दर्शाया है। बहन धन के माध्यम से भाई की सहायता करती है। जब भाई गरीबों की हक की लड़ाई लड़ते हुए जेल चला जाता है तो वह भाई की तरफ से पति के खिलाफ गरीबों का नेतृत्व करते हुए 'शहीद हो जाती है।

पिता–पुत्र के रिष्ते में आपसी अहं के कारण जहां टकराव की स्थिति बन जाती है वहीं पिता और पुत्र एक दूसरे के दुःख में दुःखी होते हैं।

पति–पत्नी के रिष्तों में आपसी मनमुटाव चलता रहता है क्योंकि कभी भी दो प्राणियों के विचार एक जैसे नही हो सकते। पति–पत्नी जीवन रूपी गाड़ी के दो पहियों के समान हैं जिनकों आपस में मिल कर चलना ही पड़ता है। शादी के बन्धन को बनाए रखने के लिए एक–दूसरे के दुःख–सुख में साथ देना ही पड़ेगा। पति–पत्नी को आपस में दोषारोपण करने से पहले अपनी गलती को स्वीकार करना पड़ेगा। तभी

पति–पत्नी का रिष्ता रेत–पानी का मेल न बनकर दूध–पानी के मेल का बनेगा। इस बात को उपन्यास का नायक अपनी गलती स्वीकार करके मानता भी है और पत्नी को अपना लेता है।

लेखक ने अन्य रिष्तों ननद–भाभी, ससुर–बहू, माँ–बेटी आदि का उपन्यास कथा की मांग के अनुसार वर्णन किया है।

.....

संदर्भ संकेत

1. प्रेमचंद, कर्मभूमि 87 पृ., प्रथम संस्करण–1993, किताबघर अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली
2. वही., पृ. 88
3. वही., पृ. 88
4. वही., पृ. 89
5. वही., पृ. 108
6. वही., पृ. 333
7. वही., पृ. 397
8. वही., पृ. 86
9. वही., पृ. 91
10. वही., पृ. 114
11. वही., पृ. 118
12. वही., पृ. 188